

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१३/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी आत्माएं अपने लाइट को देखें.. ब्रेन के अंदर, हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में आप आत्मा का सिंहासन है.. उस सिंहासन पे आप आत्मा आपके मूलस्वरूप स्थिति में, लाइट के स्थिति में स्थित हो... देखिए आप आत्मा से लाइट की किरणों निकल रही हैं... सभी अनुभव करें... सभी स्पष्टता से अपने लाइट को देखें... चमकता हुआ सितारा आप आत्मा, यह आपका सत्य स्वरूप है, मूलस्वरूप है... देखते जाइए अपने लाइट को... अगले १० सेकंड के लिए आप आत्मा आपके सिंहासन पर स्थित मूलस्वरूप में, इसे देखिए...

जितना आप आपके मूलस्वरूप को साइलेंस में बैठकर अनुभव करेंगे, उतना आपका मूलस्वरूप जागृत होता जाएगा। आप आत्मा की लाइट को ही सिर्फ आपको देखना है। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। अति सहज यह अवस्था है। ना ही इसमें आपके ब्रेन के ऊपर किसी भी प्रकार का प्रेशर आएगा। अति सहज रूप से अपने मूलस्वरूप को देखना। अपने मूलस्वरूप का, अपने मूलस्वरूप के लाइट का अनुभव करना क्योंकि सत्य में आप यह हो। जो असत्य है - हड्डी-मांस का शरीर, उसको आप सत्य समझकर बैठे हो और उस कारण ही आपको दुख, कठिनाई, परेशानियां आ रही हैं। जो आप नहीं हो, जो आपकी रियल आइडेंटिटी नहीं है, वही आपने अपनी मान ली है।

आप खुद ही चेक करना पूरे दिन भर में आप कौन सी अवस्था में रहते हो। अगर आप खुशनुमा, खुशी की अवस्था में रहते हो तो आप आपके सत्य स्वरूप में हो। आप आत्मा जी रहे हो। पर अगर पूरे दिन भर में आपकी अवस्था ऊपर-नीचे हो रही है, आपको किसी भी कारण से दुख-दर्द से जाना पड़ रहा है या

किसी भी प्रकार की कठिनाइयां या परेशानियां सामने आ रही हैं, आपको उनसे गुजरना पड़ रहा है तो समझ जाना आप देह के भान में जी रहे हो। देह सत्य नहीं है। आत्मा देह को चलाती है। आत्मा शाश्वत सत्य है। इसलिए जब भी आपकी अवस्था ऊपर-नीचे हो, मन में अस्वस्थता हो, शरीर में कहां परेशानी हो, समझ जाना आप देह भान में आ गए हो पूर्ण रूप से।

जब-जब आत्मा अपने आत्मिक स्थिति में, मूलस्वरूप अवस्था में रहती है तो अपने आप वह खुशी में रहती है। वो दिन भर शरीर के द्वारा कर्म भी करेगी पर वो उसकी आंतरिक स्थिति खुशी की ही रहेगी। इसलिए सभी चेक करना, आपकी पूरे दिन भर की २४ घंटे की यात्रा में आप आत्मा कितना जीते हो और आप देह भान में कितना समय रहते हो। आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में रहेगी तो मन बाहरी प्रभाव वाले वाइब्रेशन से या मायावी अस्तित्व से प्रभावित नहीं होगा। मन भी शांत होगा, बुद्धि भी शुद्ध होगी और संस्कार भी वही इमर्ज होंगे, जो मूलस्वरूप अवस्था के हैं।

इसलिए आपको कॉन्ससियसली अपने मूलस्वरूप को, अपनी लाइट को देखना होगा क्योंकि लाइट को देखते-देखते आप जो कर्म करोगे, वही कर्मों के संस्कार कॉन्ससियसली आपके अंदर आते जाएंगे। किसी भी संस्कार को बनाने के लिए, कॉन्ससियसली वह संस्कार आपको आपके अंदर इमर्ज करना पड़ेगा। कोई चाहता है कि उसका स्वभाव शांत स्वरूप रहे, तो कॉन्ससियसली उसको शांत स्वरूप अवस्था में रहकर व्यवहार में आना होगा। इसका अभ्यास, इसकी प्रैक्टिस करनी होगी और फिर अपने व्यवहार को खुद को ही चेक करना होगा। अभी कुछ समय पहले हमने किसी से व्यवहार किया तो क्या यह व्यवहार शांतिपूर्वक था? आपको ही अंदर से उत्तर आएगा कि कितना शांतिपूर्वक था और कितना उसमें अशांति थी। तो ऐसे कॉन्ससियसली आप व्यवहार में उस गुण को लेके आना, उतरना। फिर व्यवहार होने के बाद अपनी चेकिंग करना — क्या पूर्ण शांतिपूर्वक व्यवहार हुआ या कुछ मायावी अस्तित्व ने रिएक्शन दिखाई? कुछ मायावी अस्तित्व ने चेहरे पर एक्सप्रेसन दिखाए या कुछ मायावी अस्तित्व ने

मन में विचार चलाए, भल व्यवहार बाहरी रूप से शांतिपूर्वक लगा? यह चेकिंग हर किसी को उस संस्कार को लेकर करनी होगी, जो जिस गुण का संस्कार अपने अंदर चाहते हैं।

जब तक आप कोई भी गुण को कॉन्ससियसली आपके दिनचर्या में, कर्मों में, व्यवहार में नहीं लाते, आपके सभी कर्मेन्द्रियों द्वारा तब तक उस संस्कार की, उस गुण की ऊर्जा आपके सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां और सभी स्थूल कर्मेन्द्रियां में नहीं जाएगी। आपको कॉन्ससियसली उस गुण में रहकर कर्म करने होंगे। तब ही उस गुण की ऊर्जा हर एक आपके सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां, आपके सभी स्थूल कर्मेन्द्रियां और आपके शरीर के हर एक सेल्स में उस गुण की, उस संस्कार की ऊर्जा जाएगी; और फिर वह आपका गुण अनकॉन्ससियसली आपके व्यवहार में आता जाएगा क्योंकि उस गुण की, उस संस्कार की ऊर्जा आपने प्रैक्टिस करके पहले कॉन्ससियसली, आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों में भर दी है। अभी ना चाहते हुए भी आपका व्यवहार उस ही प्रकार से होगा जो आपके अंदर, आपके संस्कारों के अंदर जिस गुण की ऊर्जा भरी है।

इसलिए परमात्मा ने शिक्षा दी है — आपको अगर कोई एक संस्कार बनाना है, तो आपको उसकी प्रैक्टिस कम से कम चार मास तक करनी होगी। लगातार चार मास तक कोई भी आत्मा अगर हर कर्म में शांतिपूर्वक व्यवहार करे, हर किसी से शांतिपूर्वक बात करे, अपने निजी कर्मों में शांतिपूर्वक कॉन्ससियसली वह कर्म करे — ऐसे लगातार चार मास तक कॉन्ससियसली शांति की, इस गुण की ऊर्जा हर कर्म में लाने के बाद ही चार मास के बाद, यह शांति का स्वभाव और संस्कार आप आत्मा का अनकॉन्ससियसली बनता जाएगा।

इसलिए सबसे पहले जो भी गुण, जो भी आप दिव्य गुण आपके अंदर चाहते हो उनका संस्कार, पक्का संस्कार, कड़ा संस्कार आप चाहते हो, तो सबसे पहले आपको उस गुण या दिव्य गुण की, आप आत्मा को कॉन्ससियसली कर्मों में उसकी प्रैक्टिस करनी होगी। ऐसे-ऐसे एक-एक दिव्य संस्कार कॉन्ससियसली आप आत्मा अगर प्रैक्टिस करें, तो एक-एक दिव्य संस्कार आप आत्मा का अनकॉन्ससियसली संस्कार में परिवर्तन हो जाएगा। सबसे पहले मेहनत करनी होगी उस गुण को धारण

करने की, उस गुण को संस्कार में उतारने की। कुछ भी हो जाए, कैसी भी परिस्थिति आए पर इस चार मास में 'मैं आत्मा इस गुण के साथ ही कर्मों में और व्यवहार में उतरंगी'। यह अपने आप से दृढ़ संकल्प करना होता है। तब ही आप हर परिस्थिति में उस गुण को पकड़कर अपने व्यवहार में उतारते जाओगे। जितना आपका दृढ़ संकल्प होगा उस गुण को धारण करने में, उतना वह गुण आपके धारणा में आ जाएगा और वही आपका अनकॉन्ससियस संस्कार बन जाएगा, पर जितना आपका सच्ची दिल का दृढ़ संकल्प होगा। इसलिए परिवर्तन संस्कारों का करना है। कोई बाहरी बातों का, चीजों का नहीं। संस्कार परिवर्तन ही सब कुछ है।

इसलिए अपने अंदर रॉयल संस्कार उतारने का अभ्यास करो। जितना-जितना रॉयल संस्कारों को अपने अंदर धारण करते जाओगे, उतनी आप आत्मा की ऊर्जा बढ़ती जाएगी। आत्मा के अंदर रॉयल्टी, यह गुण भी है, पर जब आप आत्मा मूलस्वरूप में बैठेगी तभी यह रॉयल्टी का गुण इमर्ज हो जाएगा। एक है रॉयल्टी के गुण को, रॉयल्टी के शक्ति को जागृत करना और दूसरा है रॉयल्टी के संस्कारों को अपने संस्कार बनाना।

इसलिए सभी आत्माएं चेक करें अगर आपको अगले कल्प में, श्रेष्ठ पार्ट में जाना है तो आपके अंदर कितने रॉयल संस्कार हैं, इनकी चेकिंग करें। क्या आपको लगता है कि आपका उठना, बैठना, चलना, फिरना रॉयल है? आपका शरीर को भोजन खिलाना, पानी पिलाना रॉयल है? चेक करना आपका किसी के कर्म, व्यवहार में आते जो बात करने का ढंग है, क्या वह रॉयल है? हर कोई अपने अंदर के रॉयल संस्कारों को चेक करना। ऐसे नहीं ऊपर-ऊपर से आप नाटक करो, एक्टिंग करो या दिखावा करो और अंदर मन में कुछ और ही बातें चल रही हैं। आपके अंदर मन में जो चलता है, वही बाहर ऊर्जा के रूप में सामने वाले को महसूस होता है, फील होता है। इसलिए सामने वाला भी समझ जाता है कि यह उसका नाटक है या यह उसका ओरिजिनल संस्कार है। इसलिए अपनी हंसी नहीं कराना। अपने अंदर रॉयल्टी की चेकिंग कराना और रॉयल्टी के संस्कारों को धारणा में उतारना।

रॉयल्टी के संस्कार इसमें सब आता है। इसमें सुख भी महसूस होता है। शांति भी महसूस होती है। प्रेमपूर्ण, स्नेहपूर्ण व्यवहार भी महसूस होता है। नम्रता भी महसूस होती है। दिव्यता भी अनुभव होती है। आनंद भी महसूस होता है। एक रॉयल्टी के संस्कारों को अपना निजी संस्कार बनाने से इतने सारे गुण, दिव्य गुणों की अनुभूति अपने आप होती है। इसलिए रॉयल्टी के संस्कारों को कम नहीं समझना। उनको अपनी धारणा में उतारने की कोशिश करना। रॉयल्टी एक ऊर्जा है, एक शक्ति है। जितना-जितना आपका दिल का संकल्प होगा, आपकी सच्ची दिल होगी कि आपके अंदर यह रॉयल्टी का गुण आपकी धारणा में आए, संस्कार में आए। जितनी आपकी सच्ची दिल, जितना आपका संकल्प, आपके संकल्प की तीव्रता उतना रॉयल्टी की शक्ति, रॉयल्टी का गुण आप आत्मा के धारणा में आता जाएगा।

इसलिए कोई ये ना कहे 'हमने तो बहुत प्रयास किया रॉयल्टी में उठने का, बैठने का, शरीर को भोजन खिलाने का, चलने का पर पता नहीं क्यों संस्कार नहीं बन रहा'। उसका कारण है कहां तो आप के उस संस्कार को लेके संपूर्ण दिल नहीं है। कहां तो आपको संपूर्ण सच्ची दिल से आपने उस गुण के लिए, उस संस्कार के लिए संकल्प नहीं उठाया है। कहां तो कमी रही है। जहां सच्ची दिल से जिस आत्मा का संकल्प होता है, वहां परमात्मा की शक्तियां पहुंच जाती हैं। यही यूनिवर्स का एक लॉ है, ऑटो सिस्टम में डाला हुआ। इसलिए आप जो चाहोगे वही आपको मिलता है।

अगर आपको लगता है आप जो हो, जैसे हो, ठीक हो तो आपके अंदर कभी भी परिवर्तन नहीं आ पाएगा और आपको अगर लगता है कि, “नहीं, मेरे अंदर यह-यह गुण आने चाहिए, मेरे धारणा में, मेरे संस्कारों में यह-यह गुण आने चाहिए, उतरने चाहिए” तभी वह गुण, उस संस्कार की धारणा होगी। इसलिए खामखा कोई ये ना कहे “हमने तो कितने प्रयास किए, कितना पुरुषार्थ किया पर यह तो हमसे ही नहीं रहा।” सच्ची दिल की कहां तो कमी रही। निश्चय बुद्धि से संकल्प उठाने में कहां तो कमी रही। इसलिए वह शक्ति रूपी गुण आपके अंदर नहीं आ पाया, आप आत्मा के अंदर नहीं आ पाया।

अगर सच्ची दिल से आप चाहते हो आपका परिवर्तन हो, जो-जो बात में आप चाहते हो आपका परिवर्तन हो, वो-वो और उतनी ही बातें आपसे, आप में से परिवर्तित हो पाएगी। जितने बातों के लिए आप दिल से चाहोगे उतना ही परिवर्तन हो पाएगा। इसलिए सभी अपने आप को देखें। आपकी परिवर्तन की कितनी दृढ़ता है, परिवर्तन की, संकल्प की कितनी दृढ़ता है और कितनी सच्ची दिल है। हर एक गुण शक्ति है, परमात्मा की शक्ति है। वो तभी आपके अंदर आ पाएगी, इमर्ज हो पाएगी, जागृत हो पाएगी जब आपकी उस गुण, इस गुण रूपी शक्ति के लिए सच्ची दिल होगी और दृढ़ संकल्प होगा। इसलिए सभी परमात्म शक्तियां सदैव आपको मदद करने के लिए तैयार हैं। सिर्फ आपके संकल्प को, आपके सच्ची दिल को चेक करना। कहीं आप आपको जो है, जैसे है उसमें तो आप खुश नहीं हो या कहीं आप चाहते हो आपके अंदर यह-यह आ जाए।

समझ भी एक शक्ति है। अगर सच में आप चाहते हो कि आप हर बात में समझदार बनो, आपको हर बात समझ में आ जाए, तो सच में आप दिल से संकल्प करना। सच्ची दिल से संकल्प करना कि, “मुझ आत्मा को सच में समझदार बनना है। मेरे अंदर परमात्मा जो-जो शिक्षाएं देते हैं, उन सभी की समझ मुझ आत्मा के अंदर आ जाए।” हर एक शक्ति, सच्ची दिल और आपका दृढ़ संकल्प, उस पर ही आपको मदद करती हैं। ड्रामा अति सहज है। सारा खेल आपकी सच्ची दिल की चाहना पर है, आपके संकल्प पर है, आपकी सच्ची वृत्ति और दिल के भाव पर है। इसलिए आज के दिन, सभी आप चेक करना कि क्या आपको आपके अंदर कौन-कौन से संस्कारों में परिवर्तन करना है। सच्ची दिल से चेक करना और कॉन्ससियसली आपको कौन से गुणों को, आपके संस्कारों में सदा के लिए धारणा में लाना है, वह भी चेक करना।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी अपने सच्ची दिल की चेकिंग करना।